प्रा क्क थ न

हिंदी उपन्यास एक साहित्यिक विधा है जिस में मानव-जीवन का समग्र रूप से चित्रण रहता है । मानव-जीवन के महत्वपूर्ण दो तत्व हैं -- स्त्री और पुरूष । मानव - जीवन समय के साथ-साथ परिवर्तित होता रहता है । उपन्यास में भी परिवर्तित तत्कालिन मानव जीवन का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है । मानव - जीवन में जो परिवर्तन होता है वह विशेषतः नारी जीवन में अधिक मात्रा में दिखाई देता हैं ।

नारी समाज व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी है । भारतीय संस्कृति में नारी को गौरवपूर्ण स्थान रहा है । प्राचीन काल में नारी को पुरूष के समान ही सब अधिकार थे । अतः प्राचीन साहित्य में नारी को पुरूष के समकक्ष प्रस्तुत किया गया था । किन्तु समाज में नारी का जो स्थान था उस में धीरे-धीरे गिरावट आने लगी । पुरूष वर्ग ने नारी के सब अधिकारों को छीन लिया । नारी को पराधीन बनाकर उसे किसी के अधीन रहकर जीने के लिए विवश किया गया ।

सामन्तवादी मनावृत्ती के फलस्वरूप नारी को जन्म से ही हीन समझने जाने लगा । जो नारी पुरूष की ' प्रेरणादात्री ' थी तथा ' देवता ' का उदात्त स्थान जिसे प्राप्त था उसे समाज ने मन बहलाव का ' खिलौना ' समझ लिया । उसके साथ ' दासी ' जैसा बर्ताव किया जाने लगा । नारी-जीवन के इस बदलाव से उपन्यासकार भी प्रभावित हुए तथा उन्होंने अपने उपन्यासों में ऐसे नारी जीवन के स्वरूप को प्रस्तुत किया ।

रूढ़िग्रस्त समाज-व्यवस्था में पुरूष द्वारा नारी का बड़ी निर्ममता से शारीरिक एवं मानसिक शोषण हो रहा है । स्त्री - पुरूष के अवैध यौन-सम्बन्धों में नारी को ही दोषी एवं अपराधी माना गया है तथा पुरूष को दोषमुक्त साबित किया गया है । नारी अपने मन से पवित्र होकर भी उसे कलंकित जीवन जीना पड़ता है । पुरूष की वासना तथा पशुता का शिकार बनकर नारी को अवमान एवं लांछना की आग में आजीवन जलना पड़ता है । कभी-कभी आत्महत्या का पथ भी अपनाती है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध शोषित नारी जीवन से सम्बन्धित है । निम्न वर्ग की नारी का जीवन, उनके जीवन में आनेवाली समस्याएँ किसी भी विचारशील एवं सहृदय व्यक्ति के चिन्तन का विषय बन सकता है । डॉ. रांगेय राघव के ' कब तक पुकारूँ ' और ' मुर्दो का टीला ' उपन्यासों को पढ़कर उन में चित्रित नारी पात्रों ने मन को आलोकित कर दिया । परिणामस्वरूप प्रस्तुत विषय पर कुछ लिखने-सोचने के लिए मुझे प्रेरित किया ।

डॉ. रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों में निम्न जाति, दासी वर्ग की नारियों के घृणित जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है । पूँजीवादी लोग धन, सत्ता के बलपर निम्न वर्ग का शोषण करते हैं । निम्न वर्ग की नारी को केवल भोग्या बनाते हैं । ये नारियाँ विवश होकर जीवन यापन के लिए अपना तन बेचती हैं । किन्तु इसके मूल में सामाजिक, आर्थिक विषमता, सामन्तवादी पुरूषवर्ग की कामलिप्सा है । अपने बेबस, अपमानित एवं लांछनीय जीवन से ये नारियाँ मुँह नहीं मोड लेती । जीवन के प्रति आस्था बनाए रखती हैं । निम्न जाती की होकर भी इन नारियों के हृदय में मानवता, मनता, प्रेम, आदि भावनाओं का समावेश हैं । ये नारियाँ स्वाभिमानी, निर्भीक हैं । आत्मगौरव, अत्मसम्मान के प्रति ये नारियाँ जागृत हैं । अपने अधिकार, स्वतंत्रता, दासता से मुक्ति, अस्तित्व के लिए ये नारियाँ हिम्मत से सामन्तवादी, शोषक लोगों के खिलाफ संघर्ष एवं विद्रोह करती हैं और उन्हें सचेत कर देती हैं कि वे नीच जाति की वेश्या व्यवसाय करनेवाली नारियाँ हैं किन्तु वे अबला बनकर उनके हाथों की कठपुतली तथा उनके आत्याचारों को नहीं सह सकती बल्कि सबला बनकर उन आत्याचारों शोषण के खिलाफ वे लड़ भी सकती हैं चाहे उनका जीवन समाप्त हो जाये मगर वे हार स्वीकार नहीं करती । रांगेय राघव की विवेच्य नारियाँ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हैं । वे भोग्या बनकर लाचार, मूल्यहीन, पशुतुल्य जीवन जीना नहीं चाहती बल्कि मानवीय ढंग से जीने के लिए संघर्ष करने का अदम्य साहस, शक्ति उनमें हैं । इसे स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध छः अध्यायों मे विभाजित किया है । प्रथम अध्याय रांगेय राघव के व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्बन्धित है । द्वितीय अध्याय में ' कब तक पुकारूँ ' आँचलिक उपन्यास की परिभाषाएँ एवं पृष्ठभूमि तथा मुर्दो का टीला ऐतिहासिक उपन्यास की परिभाषाएँ एवं पृष्ठभूमि को

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

प्रस्तुत किया है । तृतीय अध्याय के अन्तर्गत आलोच्य उपन्यासों का कथ्य एवं कथानक को स्पष्ट किया है । और उपन्यासों में चित्रित जन-जातियों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन यापन का अध्ययन प्रस्तुत किया है । चतुर्थ अध्याय में विवेच्य उपन्यासों में चित्रित तेरह नारी पात्रों का चरित्रगत विशेषताओं के साथ समान्य परिचय दिया है । और इन नारियों के जीवन में आनेवाली सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं पर विचार किया गया है । पंचम अध्याय में आलोच्य उपन्यासों के चित्रित निम्न वर्ग के नारियों का अपने उत्पीड़ित, बेबस जीवन की ओर देखने का विशिष्ट दृष्टिकोण का सोदाहरण विवेचन किया गया है । षष्ठ अध्याय में प्रस्तत लघु शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों का समावेश किया गया है ।

श्रद्धेय गुरूवर डॉ. हिंदुराव गोपाळ साळुंखे, प्रपाठक एवं हिंदी विभाग अध्यक्ष, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के सुदक्ष निरीक्षण, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा के कारण प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध सम्पन्न हो सका । अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर लघु शोध - प्रबंध की एक-एक पंक्ति देखी, पढ़ी और उसमें उचित सुधार किया है । उनके अमूल्य सुझाव, निर्देशन एवं प्रोत्साहन के कारण ही मैं ने " रांगेय राघव के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन " पर अपने विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अतः उनके प्रति शाब्दिक आभार प्रकट करना औपचारिकता मात्र होगा । मैं अपने गुरूवर के श्रीचरणों पर नतमस्तक हूँ तथा हृदय से उनकी ऋणी हूँ ।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे, प्रा. जयवंत जाधव आदि के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन किया ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के कार्य में लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथपाल श्री. एस्. ई. जगताप तथा अन्य कर्मचारी, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के ग्रंथपाल श्री. बी. एस्. गायकवाड, श्री, ए. बी. पोरे एवं अन्य कर्मचारी आदि की भी मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में अत्यन्त तत्परता से मेरी सहायता की है ।

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

मेरे शोधकार्य में सदा अधिक प्रोत्साहित एवं प्रेरित करनेवाले मेरे पूज्य पिताजी श्री. आनंदा जगन्नाथ बल्लाळ, माँ सौ लीला आनंदा बल्लाळ, मित्र हणमंत सराटे आदि के आशिष एवं शुभकामनाओं के बल पर ही प्रस्तुत शोधकार्य सम्पन्न हुआ है, उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ । मेरी बहन दीपा, भाई सुकेश, संजय तथा मेरे सहकारी कुमारी मीना शिंदे, वनिता जाधव, नीलम, रेखा, जयश्री, सविता जाधव, सौ. नयन जगदाळे, सौ. उषा जाधव, अजय फर्यादे आदि ने मेरी विशेष मदद की है । उनके प्रति मैं आभारी हूँ ।

उन सभी आलोचक, लेखक तथा विद्वानों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके ग्रंथ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूरा करन में सहायक हुए हैं ।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंकन कार्य करनेवाली सौ. शोभना खिरे, संचालिका क्वालिटी सायक्लोस्टाईलिंग, सातारा मैं आभारी हूँ जिन्हों ने अत्यन्त कम समय में टंकलेखन करके इस शोध-प्रबंध को ऐसे मोहक रूप से सजाया है ।

सा ता रा

दिनांक : 30/6/2000

विनीत,

Ballal

कु. एस्. ए. बल्लाळ.

विषयानुक्रम

प्रथम अध्याय : राघवजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय 1 - 28

वंशपरिचय, जन्मस्थान, जन्म-तिथी, पारिवारिक व्यवस्था, कौटुम्बिक संस्कार, पिता, माता, भाई, मौसी, श्रवणकुमार, शादी और संतति, शिक्षा एवं कार्य, अन्य विषय का अध्ययन, व्यक्तित्व के पहलु, शारीरिक गठन, वेशभूषा, अभिरूची, साहित्य लेखन योजना, मृत्यु,

कृतित्व - प्रेरणास्त्रोत, प्रथम रचना, रचनाओं की सूची, निष्कर्ष,

द्वितीय अध्याय : **रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों की पृष्ठभूमि** 29 - 44

1. ' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास की पृष्ठभूमि -

   प्रस्ताविका, अर्थ, परिभाषाएँ, पृष्ठभूमिक

2. मुर्दो का टीला की पृष्ठभूमि

   प्रस्ताविका, परिभाषाएँ, पृष्ठभूमि

   निष्कर्ष,

तृतीय अध्याय : रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों का कथ्य एवं चित्रित जन-जातियों का जीवन यापन 45 - 78

अ) कथ्य :

1. ' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास का कथ्य
2. ' मुर्दो का टीला ' उपन्यास का कथ्य
3. ' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास का कथानक
4. ' मुर्दो का टीला ' उपन्यास का कथानक

आ) **जन** -जातियों का जीवन यापन

क) सांस्कृतिक जीवन यापन

1. रूढ़ि प्रथा परम्परा

2. उत्सव-पर्व - तीज-त्यौहार

3. लोकगीत

4. लोककथा

5. मनोरंजन के साधन

ख) सामाजिक जीवन यापन

1. देवी-देवाता सम्बन्धी मान्यताएँ

2. व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

3. वेशभूषा एवं खान-पान

4. अंध विश्वास

5. जातीय भेद - भावना

6. बोलचाल

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र एवं उनके जीवन की समस्याएँ 79 - 138

अ) नारी पात्र

1. ' कब तक पुकारूँ '

प्यारी, कजरी, चंदा, धूपो, बेला, सौनो, सूसन

2. ' मुर्दो का टीला '

नीलूफर, हेका, वेणी, चंद्रा, वीणा, षोड़शी.

आ) समस्याएँ

1. बहु-विवाह समस्या
2. अनमेल विवाह समस्या
3. सौतिया दाह समस्या
4. विधवा विवाह समस्या
5. दासत्व की समस्या
6. बलात्कार की समस्या
7. रखैल समस्या
8. कुँवारी माता
9. दैहिक विक्रय
10. सामाजिक कुरीतियों की समस्या
11. पति-पत्नी के रिश्तों की समस्या
12. आत्महत्या की समस्या
13. आर्थिक समस्या

पंचम अध्याय : राजेय राघव के आलोच्य उपन्यासों की नारियों का जीवन दर्शन 139-193

प्रस्ताविका, जीवन दर्शन

1. जीवन के प्रति दृष्टिकोण
2. ईश्वर सम्बन्धी विचार
3. भाग्य के बारे में विचार
4. कर्म - कर्म की स्थिति
5. समाज के बारे में विचार

राजनीति, साम्यवाद / मार्क्सवाद, प्रेम, विवाह,

विवाह बाहय सम्बन्ध, नैतिकता

निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय : उपसंहार 194-205

संदर्भग्रंथ सूची 206-209